क्रियायोग अनुसन्धान संस्थान

संचालन द्वारा: योग सत्संग समिति/क्रियायोग सत्संग समिति
संस्थापक-अध्यक्ष : श्री गुरुदेव स्वामी श्री योगी सत्यम्

मातृ केन्द्र व मुख्यालय
झूँसी, इलाहाबाद-211019
उत्तर प्रदेश, भारत
दूरभाष : 0532-2569243
मोबाइल: 9415217277/81
ई-मेल:yogisatyam@hotmail.com

उत्तरी अमरीका केन्द्र :
योग फेलोशिप टेम्पुल
388 प्लेन्स रोड, किचनर. ओन्टोरिया
कनाडा, एन 2 आर 1 आर 8
दूरभाष : 001-519-696-3869
ई-मेल: kriyayoga.canada@yahoo.ca

बेवसाइटः kriyayoga-yogisatyam.org

वर्तमान समय आरोही द्वापर का 313 वाँ वर्ष है

क्रम संख्या.....

दिनाँक.....

प्रकाशनार्थ

1 फरवरी, 2013 महाकुंभ क्षेत्र में मोरी रोड पर क्रियायोग का विशेष कार्यक्रम

राष्ट्रीय परिवर्तन के लिए क्रियायोग ध्यान की अनिवार्यता

1 फरवरी 2013 इलाहाबाद । ''आरोही द्वापर काल के उषाकाल नव प्रभात प्रारम्भ होते ही मानव के सिर व रीढ के अंदर सुशोभित मस्तिष्क में न्यूरान्स के विकासोन्मुख परिवर्तन प्रारम्भ हो जाने से मनुष्य के द्वारा किये जाने वाले क्रियाकलाप में भारी परिवर्तन आ रहा है । शासन –प्रशासन, न्यायपालिका, उद्योग, कृषि, शिक्षा आदि का पुराना आवरण हट रहा है और धीरे –धीरे युगानुकूल शक्तिशाली नया आवरण बन रहा है । पुराने सभी रीति रिवाज व नियमावली बौनी पड गयी हैं । आज ऐसी शिक्षा पद्धति की आवश्यकता है जो जीवन के प्रत्येक क्षणों में काम आये । अभी तक इंजीनियरिंग और मेडिकल की पढाई छोडकर जो भी शिक्षा दी जाती है उसका उपयोग दैनिक जीवन में नहीं है । आध्यात्मिक क्षेत्र के सभी सद्ग्रन्थ, वेद, पुराण, रामचरितमानस, महाभारत, गीता, बाइबिल, कुरान आदि की व्याख्याएँ वर्तमान जीवन के लिए पूरी तरह अनुपयुक्त हो गयी हैं । इन सद्ग्रन्थों के अंदर छिपे रहस्य व सत्य व अहिंसा की समस्त नियमावली जीवन में उतारने की आवश्यकता पड गयी है ।'' उक्त विचार अन्तर्राष्ट्रीय क्रियायोग संत स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने कुम्भ मेले में आये हुए कल्पवासियों, तीर्थयात्रियों

तथा देश–विदेश से आये हुए साधकों को क्रियायोग प्रशिक्षण के दौरान व्यक्त किया ।

स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने आगे कहा कि विष्णु के अवतार भगवान श्री राम और भगवान श्रीकृष्ण तथा शेषनाग के अवतार भगवान श्री लक्ष्मण तथा इसी तरह से अनेक जो अवतार हुए हैं किसी ने भी मरने और मारने की शिक्षा नहीं दिया है । शास्त्रों की गलत व्याख्या हो जाने के कारण भगवान श्री राम और भगवान श्रीकृष्ण के द्वारा भयंकर रक्तपात व लडाई दर्शाया गया है । आज आवश्यकता है कि शास्त्रों की शुद्ध व सच्ची व्याख्या प्रस्तुत हो जिससे समाज में सत्य व अहिंसा की स्थापना हो सके और राष्ट्र की समस्याओं का निराकरण हो सके ।

स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने आगे कहा कि शास्त्रों की सही व्याख्या समझने और उस पर चलने के लिए क्रियायोग ध्यान की अनिवार्य आवश्यकता है । इसलिए समय आ गया है कि क्रियायोग का दीप घर–घर में जले ।

मुक्ति मार्ग पर स्थित क्रियायोग शिविर के भव्य पण्डाल में भारत के अनेक प्रदेशों से आये हुए भक्तों के साथ–साथ अमरीका, कनॉडा, ब्राजील, रूस, गयाना, सिंगापुर, पोलैण्ड, आस्ट्रेलिया आदि देशों से आये हुए साधकों ने भारी संख्या में भाग लेकर शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक लाभ प्राप्त कर रहे हैं ।

क्रियायोग प्रशिक्षण एवं अभ्यास का कार्यक्रम प्रतिदिन कुम्भ मेला क्षेत्र में काली मार्ग पर प्रातः 6 से 7 बजे तक, श्री श्री महावतार बाबा वटवृक्ष परिसर में प्रातः 6:30 बजे से 8 बजे तक, कुम्भ मेला में मुक्ति मार्ग पर प्रातः 8:30 बजे से 9:30 बजे तक तथा दोपहर 2:30 बजे से सायं 5 बजे तक और रात्रि 11 बजे से 1 बजे तक हिन्दी तथा अँग्रजी भाषा में बडे ही प्रभावशाली रूप में चल रहा है ।

– योगमाता